तोरणद्वार

तोरण: चारो तोरणों में से दक्षिणी तोरण स्तूप का मुख्य प्रवेश द्वार है। यहां स्थापित अशोक के स्तंभ अतिरिक्त प्रदक्षिणा पथ की सीढ़ियों के भी इसी तरफ होने से ऐसा प्रतीत होता है। तोरणों पर उनके भेंटकर्ता के नाम भी उत्कीर्ण है। समंध का प्रभाव दक्षिणी तोरण पर सबसे अधिक पड़ा, जबकि उत्तरी तोरण सबसे अच्छी हालत में है। इसके मूल अलंकारिक गुण तोरण की प्राचीन सुंदरता का यथेष्ट आभास देते हैं। इसके शिल्पी मुख्यतया हाथीदांत आदि का काम करने वाले कारीगर थे। यह तथ्य दक्षिणी तोरण के पश्चिमी स्तंभ पर उत्कीर्ण अभिलेख से ज्ञात होता है, जो बताता है कि तोरणों का अलंकरण विदिशा के हाथीदांत के कारीगरों का किया है।

प्रत्येक तोरण में दो चौकोर स्तंभ है, जो चार शेर, हाथी या तोंदल बौनों के समूह से अभिषिक्त हैं, जिन्होंने तीन वक्राकार प्रस्तरपादों, जिनके किनारे कुडलित हैं, को सहारा दिया हुआ है। स्तंभों की ऊंचाई लगभग 8.53 मीटर है। प्रस्तरपादों के मध्य, जो कि एक दूसरे से चार चौकोर शिलाखंडों द्वारा अलग हैं, तीन नक्काशीदार छोटे स्तन घुसेड़े गये हैं। इनके बीच का खाली स्थान दोनों तरफ को मुंह किये हुए हाथी या घुड़सवारों से भरा हुआ है। स्तंभों के शीर्षफलक से बर्हिविष्ट (बाहर निकलते हुए) तथा सबसे निचले प्रस्तरपाद के किनारों को सहारा देते हुए शालभडिजकाओं की मूर्तियां बनी है। प्रस्तरपाद के किनारों के मध्य के खाली स्थान को इसी प्रकार की परंतु कुछ छोटी मूर्तियों से भरा गया है, जबकि मरगोल (कुंडलित कलाकृक्ति) पर सिंह या हाथी सवार खड़े हैं। सबसे ऊपरी प्रस्तरपाद के मध्य में एक धर्मचक्र है जिसके बगल में चामर लिए हुए यक्ष और सूक्ष्मता से नक्काशी किये हुए त्रिरत्न बने हैं, जो बुद्ध धर्म और संघ के प्रतीक हैं। सबसे निचले प्रस्तरपाद के अधोभाग (निचले भाग) में कमल की कतार उत्कीर्ण की गई है। देहलीज का ऊपरी भाग गोलाकार चित्र द्वारा मध्य में और दो अर्थ-गोलाकार चित्रों द्वारा किनारे पर सजाया गया है। इन चित्रों के बीच १ अलिकार बनी है।

तोरण की पूरी सतह विभिन्न दृश्य अलका की नक्काशी से मरी है। शिल्पकारी काफी उन्नत व उच्च कोटि की सजीव प्रतीत होती है। समस्त धोरणों मेदिका पर लाल रंग किया हुआ था जिसका कुछ अंश पूर्वी तोरण वसा की वेदिका पर अब भी देखा जा सकता है।

धोरणों की नक्काशी के विषय को मोटे तौर पर निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है।

(1) जातकों के दृश्य

(2) भगवान बुद्ध के जीवन के दृश्य

(3) बौद्ध वर्ग के उत्तरकालीन इतिहास की घटनाएं

(4) मानुषी बुद्धों से संबंधित दृश्य कथा

(5) विभिन्न दृश्म तथा सजावट।

(1) जातकों के दृश्य जातकों की कहानियां गौतम बुद्ध के पूर्वजन्मों से संबंधित है जब बोधिसत्व की अवस्था में उन्होंने पशु-पक्षी व मनुष्य के रूप में अनेक जन्म लेकर दान् कौल आदि पारमिताओं का मालन करके बुद्धत्व प्राप्त किया था। यहां केवल पांच जातकों के ही दृश्य मिलते है, लेकिन विस्तार से मिलते है जिसने समस्त कथा स्पष्ट हो जाती है। ये पांच जातक है- धदन्त जातक (514), महाकपि जातक (407), महावेरसम्तर जातक (547) अलम्बुस जातक (523) और सान जातक (540)

(2) भगवान बुद्ध को जीवन को दृश्य भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित दृश्यों को तोरणों की नक्काशी में मुख्य स्थान मिला है। इन सभी दृश्यों में भगवान बुद्ध कहीं भी मानुषिक रूप में नहीं दर्शाए गए है। उनकी उपस्थिति को प्रतीक रूप में दिखाया गया है, जैसे धर्मचक्र पदचिन्ह, बोधिवृक्ष आदि।

उनके जीवन की निम्नलिखित 29 धटनाई तोरणों पर दर्शायी गई है- जन्म, बोधि प्राप्ति प्रथम धर्मोपदेश, महापरिनिर्वाण माता महामायाका रवन्न अवधारणा चार अवस्थाएं जिनमें उन्होंने बूढ़े, रोगी, शय तथा संन्यासी को देखा, महाश्रभिनिन्, भगवान के केशों की देवसा द्वारा पूजा, सुजाता द्वारा खीर भेंट पतिवार स्वास्तिक द्वारा पास की भेंट, मार द्वारा प्रलोभन आक्रमण बोधगया में पक्रनन गर्भ का दृश्य नागराज मुविलिन्द द्वारा पर्श से बचाय लपुश व भल्लिक का उरुवेला से गुजरना उनके द्वारा भिक्षापात्र भेंट करता अध्येषणा उकरेला के अग्नि-मन्दिर में सर्प का चमत्कार उरुवेला में आग लकड़ी का धमाकार रूपेक्षा में भगवान बुद्ध का नदी पर चलना कपिलवस्तु में आगमन में थी को बुद्धदेशनर पौलवन में बुद्ध का निवार, श्रावस्ती कर धमार श्रावस्ती में आम्रवृक्ष के नीचे बुद्ध दशना साकारय का बमत्कार कवि द्वारा शहद की नंद शक्र का आगमन और ही भयात्रा। (3) बौद्ध धर्म के उत्तरकालीन इतिहास के दृश्य या घटनाएं भी निम्नलिखित तीन घटनाओं को ही पहचाना जा सका है- कुशीनगर का विवाद तथा स्मृतिशेषों का बंटवारा, रामग्राम का स्तूप और अशोक की बोधि वृक्ष-दर्शन-यात्रा।

(4) मानुषिक बुद्धों से संबंधित दृश्य: सांची के शिल्पकारों का गौतम बुद्ध सहित पूर्व के छह मानुषी बुद्धों को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाना मुख्य विषय रहा है, क्योंकि लगभग प्रत्येक तोरण के प्रस्तरपादों पर इन्हें मुख्य स्थान मिला है। ये स्तूप या बोधि वृक्ष के द्वारा दर्शाये गए हैं। बोधि-वृक्ष प्रत्येक बुद्ध के लिए भिन्न-भिन्न हैं, जिससे इनको पहचाना जा सकता है। पाटलि, पुण्डरीक, शाल, शिरीष, उदुम्बर तथा न्यग्रोध वृक्ष क्रमशः विपश्यीन, शिखी, विश्वभू, क्रकुच्छन्द, कनकमुनि और काश्यप मानुषी बुद्धों को दर्शाते हैं। पश्चिमी तोरण के ऊपरी प्रस्तरपाद

के सामने की तरफ अन्य बोधि वृक्षों के साथ नागपुष्प बोधि वृक्ष भी दर्शाया गया है, जो कि भावी बुद्ध मैत्रेय का प्रतीक है।

(5) विभिन्न दृश्य व सजावट उपरोक्त दृश्यों के अतिरिक्त ऐसी अनेक नक्काशियां हैं जो भगवान बुद्ध के जीवन की ज्ञात घटनाओं पर किसी प्रकार आरोपित नहीं की जा सकती हैं, लेकिन इनका उद्देश्य धार्मिक ही है। उदाहरण के रूप में बुद्ध की न केवल मनुष्यों और दिव्य व्यक्तियों द्वारा बल्कि वन्य प्राणियों द्वारा पूजा के दृश्य या स्वर्गीय जीवन के दृश्यों का वर्णन किया गया है, जो कि मनुष्य को अच्छे कृत्य करने की प्रेरणा देते हैं।

स्तूप सं० 2 :- यह स्तूप पहाड़ी की ढलान पर लगभग 320 मीटर नीचे एक चबूतरे पर बना है और आकार व रूपरेखा में स्तूप सं. 3 से साम्य रखता है। दोनों में जो भिन्नता है, वह केवल तोरण की है। तोरण, अंड के ऊपरी भाग, सीढ़ियों की चारदीवारी से रहित होने के कारण इसका दर्शन असज्जित सा लगता है। केवल धरातल पर बनी वेदिका ही सुरक्षित है। इसकी दोहरी सीढ़ियां पूर्व की तरफ हैं। वेदिका पर मिले अभिलेखों और नक्काशी की शैली द्वारा इसके निर्माण का काल दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का प्रतीत होता है।

वेदिका के स्तंभ एक पूर्ण और दो अर्ध गोलाकार चित्रों द्वारा सज्जित हैं। प्रवेश द्वारों के निकट के केवल कुछ स्तंभ पूरी तरह नक्काशी किये हुए हैं। बुद्ध के जीवन के कुछ दृश्य जैसे जन्म, महाभिनिष्क्रमण आदि की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के अतिरिक्त नक्काशी के विषय अलंकारिक उद्देश्य वाले हैं जैसे पुष्प, पशु, पक्षी या पौराणिक जीव। पौराणिक जीवों में मनुष्य के चेहरे वाले सिंह, अश्वमुखी यक्षी, यक्ष, नाग आदि हैं। पक्षी व पशुओं में चिड़ियां, हाथी व सिंह आदि ज्यादा है। पुष्पों के विषय में कमल की अधिकता है, जो प्रत्येक एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। इसके शिल्पकारों की कला उतनी उन्नत नहीं है जितनी कि स्तूप सं० । में, लेकिन ये समकालीन कला के वास्तविक उदाहरण हैं।

स्तूप का अधिक महत्त्व इसकी कला से नहीं बल्कि इसमें से प्राप्त बौद्ध आचार्यों के शारीरिक स्मृतिशेषों के कारण है। चबूतरे से लगभग 2.13 मीटर की ऊंचाई पर, केन्द्र से 61 मीटर पश्चिम की तरफ जनरल कनिंघम ने स्मृतिशेष-प्रकोष्ठ के भीतर पत्थर की एक स्मृतिशेष-मंजूषा पायी थी। ढक्कन सहित इसका आकार 28x24 x 24 मीटर है। इसकी पूर्वी सतह पर लिखा है-"सविन विनायकान अरं कासप-गोतं उपादय अरं च वाछि-सुविजयितं विनायक", अर्थात् आचार्य (अर्हत) कासप गोत (काश्यप गोत्र) तथा अर्हत वाछि (वात्सी)-सुविजयित सहित सभी आचार्यों के (स्मृतिशेष)। मंजूषा के भीतर चित्तीदार सेलखड़ी की चार मंजूषा मिली हैं, जिन पर दस आचार्यों के नाम लिखे हैं, जिनकी जली हुई हड्डियां इनमें मिली हैं। ये आचार्य है-कासप-गोत (सभी हेमवतों के आचार्य), मज्झिम, हारितिपुत, वाछिय-सुविजयत (गोत का शिष्य), महवनाय, आपगिर,

कोडिनिपुत, कोसिकिपुत, गोतिपुत तथा मोगलिपुत। ये सभी आचार्य समकालीन नहीं थे। इस प्रकार स्तूप से प्राप्त स्मृतिशेष आचार्यों की कम से कम तीन पीढ़ियों के हैं, और यहां रखने के पूर्व कहीं और रखे गए होंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्तूप के निर्माताओं ने जानबूझ कर इन स्मृतिशेषों को रखने के लिए मुख्य अवशेषों की अपेक्षा नीची जगह चुनी, क्योंकि वे शास्ता व उनके मुख्य शिष्यों के स्मृतिशेषों के साथ इन आचार्यों के स्मृतिशेषों को रखने से झिझकते रहे होंगे।

स्तूप सं० 3 :- यह स्तूप मुख्य स्तूप से उत्तर-पूर्व में लगभग 45 मीटर की दूरी पर स्थित है। इसका प्रारूप बिल्कुल मुख्य स्तूप जैसा ही है, केवल आकार में यह उससे काफी छोटा है। इसका व्यास 15 मीटर और ऊपरी भाग को छोड़कर ऊंचाई 8.23 मीटर है। इसमें केवल एक ही तोरण है और धरातल की वेदिका के चार स्तंभ ही केवल उपलब्ध हैं। स्तंभों पर मध्य में एक गोलाकार चित्र और किनारे पर दो अर्ध-गोलाकार चित्र बने हैं, जिनके मध्य तीन फलिकाएं बनी हैं।

यह स्तूप, जिस पर केवल एक छत्र है, अपनी सीढ़ियों, हर्मिका, वेदिका आदि सहित दूसरी शताब्दी ईसवी में बनवाया गया, जब स्तूप सं० 1 का पुनरोद्धार किया गया। इस तथ्य का पता इस तरह चलता है कि किसी व्यक्ति ने दोनों ही स्तूपों की सीढ़ियों की वेदिका के निर्माण के दान में भाग लिया था। उसका नाम अभिलेखों में उत्कीर्ण है। धरातल की वेदिका लगभग एक शताब्दी बाद बनी और तोरण तो पहली शताब्दी ईसवी में बना। इसी वक्त प्रदक्षिणा-पथ के तल को 3 मीटर के लगभग ऊंचा किया गया, जिससे कि सीढ़ियों के निचले कदम उससे ढंक गये। तोरण की ऊंचाई लगभग 5 मीटर है और इसका प्रारूप मुख्य तोरणों के समान ही है। शिल्पकला इतनी उन्नत नहीं है।

इस स्तूप का महत्त्व यहां से प्राप्त सारिपुत्र व मौद्गल्यायन के स्मृतिशेषों के कारण है, जो कनिंघम ने अण्ड के मध्य में चबूतरे के धरातल के बराबर में प्राप्त किये थे। स्मृतिशेष प्रकोष्ठ के, जो 1.5 मीटर के लगभग बड़े शिलाफलक से ढंका था, भीतर दो प्रस्तर मंजूषा मिलीं जिनके ढक्कनों पर क्रमशः 'सारिपुतस' व 'महा-मोगलानस' लिखा मिला। सारिपुत्र की मंजूषा में सफेद सेलखड़ी की स्मृतिशेष मंजूषा है जो चमकदार काली मिट्टी की तश्तरी से ढकी है और चंदन की लकड़ी के दो टुकड़े भी मिले हैं। मंजूषा के भीतर अस्थि का एक छोटा टुकड़ा व सात मणिकाएं मिली हैं। ढक्कन के आंतरिक भाग पर स्याही से 'सा' लिखा है जो सारिपुत्र के नाम का अग्रभाग है।

मौद्गल्यायन की मंजूषा में दूसरी मंजूषा मिली है, जो थोड़ी छोटी है। इसमें अस्थि के दो छोटे टुकड़े रखे हैं। ढक्कन पर 'मा' शब्द लिखा है।

इन उपरोक्त स्मारकों के अतिरिक्त यहां अनेक अन्य स्तूप, स्तंभ, मंदिर व विहार मिले हैं, जो इस स्थल के बौद्ध संप्रदाय की गतिविधियों के केन्द्र होने और बौद्धधर्म के यहां पर सक्रिय होने का यथेष्ट प्रमाण देते हैं। स्थापत्य कला या शिल्पकारी आदि की दृष्टि से उन स्मारकों का कुछ विशेष महत्त्व न होने के कारण इनकी चर्चा अनावश्यक है।

नया चैत्यगिरी विहार:- महाबोधि सोसायटी द्वारा पहाड़ी की उत्तरी ढलान पर सन्

1952 ईसवी में सारिपुत्र व मोग्गल्लान की अस्थियों को रखने के लिए इसका निर्माण कराया गया। ये स्मृतिशेष सन् 1851 ईसवी में लंदन ले जाये गए थे और जनवरी 1949 ईसवी में भारत की महाबोधि सोसायटी की प्रार्थना पर भारत लौटाए गए थे।

स्तूप सं० 2 से प्राप्त दस बौद्ध आचार्यों के स्मृतिशेष भी ब्रिटिश म्यूजियम से सन् 1956 ईसवी में भारत को लौटाए गए। इनमें से पहली मंजूषा जिसमें मौग्गलिपुत्त तिस्स, कोसिकिपुत्त व गोतिपुत के अवशेष थे, भारत सरकार द्वारा श्रीलंका सरकार को भेंट कर दी गई और दूसरी मंजूषा महाबोधि सोसायटी को भेंट की गई जो नये 'चैत्यगिरी विहार में रखी गई है।

इस प्रकार सांची का महत्त्व प्राचीन स्मारकों, स्तूपों के बेहतरीन उदाहरणों, अत्यंत उन्नत शिल्पकला व बौद्ध आचार्यों के स्मृतिशेषों के कारण इतना अधिक है कि दूर-दूर से बौद्ध अनुयायी यहां आते हैं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।